Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

पटाचाराथेरी गाथा में अनित्यता का सिद्धांत

इन्दु डिमोलिया
शोधच्छात्रा,
संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान,
जे.एन.यू, दिल्ली, भारत।

सारांश – वर्तमान समय में जिस प्रकार समूचे विश्व में भौतिकतावाद पैर पसार रहा है, जिसके कारण समाज में तमाम विसंगतियाँ फैल रही है, ऐसे समय में बौद्ध दार्शनिक चिन्तन परम्परा के व्यवहारिक मूल्यों पर चलने वाली थेरीगाथा की थेरीयाँ एक उम्मीद जगाती हैं।

मुख्य शब्द– पटाचाराथेरी, गाथा, अनित्यता, सिद्धांत, भौतिकतावाद, बौद्ध, दार्शनिक।

थेरीगाथा, सुत्तपिटक के खुद्दक निकाय के 15 ग्रंथों में से एक है। इसमें परमपदप्राप्त 73 विद्वान बौद्ध भिक्षुणियों के उदान अर्थात् उद्गार 522 गाथाओं में संगृहीत हैं। इस ग्रंथ में बौद्ध भिक्षुणियों ने अपने जीवन अनुभवों को संगीतात्मक एवं आत्माभिव्यञ्जनात्मक गीति शैली में अभिव्यक्त किया है। यह ग्रंथ 16 'निपातों' अर्थात् वर्गों में विभाजित है, जो कि गाथाओं की संख्या के अनुसार क्रमबद्ध हैं।

'दर्शन' शब्द संस्कृत भाषा की 'दृश्' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। इसका शाब्दिक अर्थ है – 'देखना' या 'खोजना'। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से 'दर्शन' का तात्पर्य 'सत्य का अनुसन्धान' अथवा 'सत्य की खोज' है। दर्शन शब्द की दूसरी व्युत्पत्ति है- 'दृश्यते इति दर्शनम्' अर्थात् जो देखा जाय या समझा जाय वह दर्शन कहलाता है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार प्रामाणिक विषय-ज्ञान को दर्शन माना गया है। दर्शन को दो भागों में बाँटा गया है- आस्तिक और नास्तिक दर्शन। आस्तिक दर्शन में 'षड् दर्शन' अर्थात् न्याय, वैशेषिक, साङ्ख्य, योग, पूर्वमीमांसा या मीमांसा, उत्तरमीमांसा या वेदान्त आते हैं। नास्तिक दर्शन में चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन तीन भागों में विभाजित किया गया है।

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध के उपदेशों से बौद्ध दर्शन का उद्भव हुआ है। गौतम बुद्ध मनुष्य के रोग, वृद्धावस्था, मृत्यु तथा अन्य विविध दु:खों को देखकर बहुत पीड़ित हुए। फलस्वरूप जीवों को प्राप्त होने वाले दु:खों का कारण समझने तथा उन दु:खों को दूर करने का उपाय जानने के लिये उन्होंने वर्षों तक अध्ययन,तप और चिन्तन करके बोधि या ज्ञान प्राप्त किया। इस ज्ञान का सार उनके चार आर्य-सत्यों में मिलता है। चार आर्य-सत्य हैं- (1) दु:ख है, (2) दु:ख का कारण है, (3) दु:ख का अन्त है, (4) दु:ख को दूर करने का उपाय है। चतुर्थ आर्य सत्य को 'आष्टांगिक मार्ग' कहते हैं। इसमें दु:ख दूर करने के उपाय के

रूप में आठ साधन बतलाये गये हैं। वे हैं- (1) सम्यक् दृष्टि, (2) सम्यक् संकल्प, (3) सम्यक् वाक्, (4) सम्यक् कर्मान्त, (5) सम्यक् आजीव, (6) सम्यक् व्यायाम, (7) सम्यक् स्मृति, (8) सम्यक् समाधि। इन आठ साधनों से मनुष्य की अविद्या और तृष्णा नष्ट हो जाती है। दु:ख का पूर्ण विनाश हो जाने से पुनर्जन्म की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है। ऐसी अवस्था को बौद्ध दर्शन में 'निर्वाण' नाम दिया गया है। बौद्ध दर्शन के मौलिक सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पाद, अनित्यवाद[1], क्षणिकवाद, अनात्मवाद[2] एवं निर्वाण[3] हैं। थेरीगाथा की थेरियों ने भी अपनी गाथाओं में बौद्ध दर्शन के इन मौलिक सिद्धान्तों का वर्णन किया है-

प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त समस्त बौद्ध दर्शन का आधार स्तम्भ है। इसमें दो शब्दों का योग है- प्रतीत्य+समुत्पाद। प्रतीत्य शब्द की व्युत्पत्ति है- प्रति+इण+गतौ+ल्यप्= 'प्रतीत्य'। इसका अर्थ है प्राप्त करके, इसी प्रकार समुत्पाद का अर्थ है प्रादुर्भाव अथवा (सम+उत्+पाद) उत्पद्यमान। इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ है- किसी वस्तु की प्राप्ति होने पर अन्य वस्तु की उत्पत्ति।[4] अर्थात् "प्रत्ययों पर आश्रित उत्पत्ति का सिद्धान्त," जो सामान्यतया यह द्योतित करता है कि पूर्व परिस्थितियों के विद्यमान होने पर ही कोई कार्य अस्तित्व में आता है। तथा उन परिस्थितियों के निरुद्ध हो जाने पर कार्य भी निरुद्ध हो जाता है।[5] बुद्ध द्वारा उपदिष्ट यह प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त उस काल में प्रचलित दो अतिवाद- नियतिवाद (भाग्यवाद) एवं यदृच्छावाद (स्वभाववाद) के मध्य मध्यममार्ग का निर्देश देता बौद्ध दर्शन का द्वितीय आर्यसत्य 'प्रतीत्यसमुत्पाद' कहा जाता है। प्रतीत्यसमुत्पाद के द्वादश अंग है, जिसमें एक-दूसरे के कारण उत्पन्न होता है। इसे 'भवचक्र' नाम से पुकारते हैं। (1) अविद्या (2) संस्कार (3) विज्ञान (4) नामरूप (5) षडायतन (6) स्पर्श (7) वेदना (8) तृष्णा (9) उपादान (राग) (10) भव (11) जाति (जन्म) (12) जरामरण (बुढ़ापा तथा मृत्यु) है।

अनित्यवाद बुद्ध के प्रमुख सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पाद (ऐसा होने पर ऐसा होता है) का ही आवश्यक परिणाम है। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार कारण की उपस्थिति अवश्य ही कार्य को उत्पन्न करती है। तब इससे यह अनुमान लगाना सरल है कि वस्तुएँ अनित्य हैं। सामान्यतया भी हम वस्तुओं को उत्पन्न एवं नष्ट होते देखते हैं, बुद्ध के अनुसार यह वस्तुओं का स्वभाव ही है। उनके शब्दों में, "जो नित्य तथा स्थायी मालूम पड़ता है वह भी विनाशी है। जो महान् मालूम पड़ता है, उसका भी पतन होता है। जहाँ संयोग है वहाँ वियोग भी है, जहाँ जन्म है, वहाँ मरण भी है।" इसी तरह अन्य स्थान पर वे कहते हैं, "ये पाँच बातें अनिवार्य हैं- (1) जो वृद्ध हो सकता है वह अवश्य वृद्ध होगा। (2) जो रोगी हो सकता है वह अवश्य रोगी

[1] सर्वमनित्यम्, बौद्ध दर्शन-मीमांसा, पृ. 4

[2] सर्वमनात्मम्, बौद्ध दर्शन-मीमांसा, पृ.4

[3] निर्वाणं शान्तम्, बौद्ध दर्शन-मीमांसा, पृ.4

[4] बौद्ध दर्शन-मीमांसा, पृ. 60

[5] "अस्मिन् सति इदं भवति, इमस्मि निरोधा इम्मं निरुज्झति" मज्झिमनिकाय- 3/2/5 पालि टेक्स्ट् सोसायटी, 1960-64 ई.

होगी। (3) जो मृत्यु के अधीन है वह अवश्य मरेगा। (4) जो नश्वर है उसका अवश्य नाश होगा। (5) जो अनित्य है वह अवश्य चला जायेगा।

सावत्थी के एक सेठ के परिवार में जन्मी पटाचारा तरुणावस्था के समय अपने ही घर के एक नौकर के प्यार में पड़के विवाह पूर्व ही उसके साथ चली गई। कुछ समय बाद जब गर्भवती हुई तो अपने माता-पिता के घर जाने की इच्छा अपने पति के सामने रखी, किन्तु पति ने बहाने बनाकर टाल-मटोल कर दी। दूसरी बार गर्भवती हुई, तो वो और उसका पति माता-पिता (पटाचारा के घर) चल दिए। बीच रास्ते में जंगल पड़ता था। तूफान और घोर वर्षा में जंगल में शरण-स्थान बनाने के लिए पटाचारा का पति लकड़ी काटने चला गया। लकड़ी काटते हुए झाड़ी के पास एक साँप ने उसे डस लिया और वह तत्काल ही मर गया। इधर रात को पटाचारा को प्रसव हुआ और निराश्रय होकर बेचारी वर्षा में वह वहीं पड़ी रही। जब बारिश रुकने पर सुबह पटाचारा पति को ढूंढने निकली तो उसे मरा पाया। "हाय मेरे ही कारण मेरे पति की मृत्यु हो गई।" ऐसा विलाप करते हुए वह पिता के घर की ओर चल दी।

रास्ते में एक नदी पड़ती थी। पटाचारा के शरीर में बिल्कुल शक्ति नहीं बची थी कि वह दो बच्चों को साथ लेकर नदी पार कर सके। बड़े पुत्र को इधर किनारे पर रखकर वह अभी उत्पन्न छोटे शिशु को लेकर दूसरे किनारे पर गई और उसे एक कपड़े में लपेटकर एक झाड़ी में रख दिया। फिर बड़े पुत्र को लेने के लिए वह नदी पार करने लगी। पटाचारा नदी के बीच में थी, अचानक एक बाज ने नवजात शिशु को माँस का टुकड़ा समझकर उस पर झपट्टा मारा। बड़ी तालियाँ दी, चित्कार किया, किन्तु कुछ न हुआ। हाँ, इधर रखे सयाने बच्चे ने सोचा कि माँ मुझे ही ताली देकर बुला रही है। वह झट पानी में कूद पड़ा और बह गया। पटाचारा शोक में पागल होकर सावत्थी के मार्ग में बढ़ी जा रही थी कि उसे सावत्थी के एक पथिक से पता चला कि आज रात को सेठ, उसकी पत्नी और उसका पुत्र, तीनों ही वर्षा से घर की छत गिर जाने के कारण मर गए और श्मशान भूमि में एक ही चिता में जलाए जा रहे हैं। पटाचार विलाप करती हुई इधर-उधर पागलों की तरह भटकने लगी। उसको अपने वस्त्रों तक का होश नहीं था और इस प्रकार लज्जा आदि की भी कोई भावना उसके अन्दर न होने के कारण, उसका नाम 'पटाचारा' पड़ गया। एक बार तथागत बुद्ध सावत्थी के जेतवनाराम में एक सभा में उपदेश कर रहे थे। पटाचारा भी उधर भटकती हुई आ निकली। सभा के लोगों ने कहा, "इस उन्मत्त स्त्री को इधर न आने दो।" परन्तु तथागत ने कहा, "इसे मत रोको।इसे इधर आने दो।" जैसे ही पटाचारा तथागत के समीप आई, बुद्ध ने उनसे कहा, "भगिनी ! स्मृति लाभ कर।" बुद्ध की अनुकम्पा से पटाचारा को होश आ गया। उसने रो-रोकर पटाचारा को अपनी आपबीती सुनाई। तथागत ने उससे कहा, "पटाचारे ! तेरे पुत्र आदि तेरी शरण नहीं हो सकते। तू अपने शील को विशुद्ध कर। निर्वाणगामी मार्ग की पथिक बन। यही तेरे लिए उत्तम शरण होगी।" बुद्ध का उपदेश ग्रहण करने के बाद पटाचारा स्त्रोतापन्न फल में प्रतिष्ठित हो गई। वह स्थविर भिक्खुणियों के पास जाकर साधना करने लगी। आगे की गाथा में बौद्धों के दार्शनिक सिद्धान्त अनित्यवाद को पटाचारा के अनुभवपरक उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं-

एक दिन वह घड़े में पानी भर कर अपने पैर धो रही थी। पैर धो कर उसने पानी फेंका तो देखा कि कुछ दूर जाकर वह सूख गया। तीसरी बार फेंका तो उससे कुछ अधिक दूर जाकर वह सूख गया। तीसरी बार फेंका तो उससे कुछ अधिक दूर जाकर सूख गया।

पादे पक्खालयित्वान, उदकेसु करोमहं।

पादोदकञ्च दिस्वान, थलतो निन्नमागतं॥114॥[6]

इस दृश्य को देख कर पटाचारा सोचने लगी, "इसी प्रकार कुछ प्राणी जीवन के प्रारम्भ में भी मरते हैं, कुछ मध्यम उम्र में भी मरते हैं, कुछ अन्तिम उम्र में भी मरते हैं। सभी अनित्य हैं।" इसी पर विचार करते हुए उसने अर्हत्व प्राप्त किया।

अञ्ञतराथेरी (एक अज्ञातनामा भिक्खुणी)[7] की गाथा से भी अनित्यता का ज्ञान होता है। अञ्ञतराथेरी एक दिन रसोईघर में खाना पका रही थी। सहसा आग अधिक जल जाने से कढ़ाई में पक रहा शाक जल गया। इस घटना से उसे संसार की सारी वस्तुओं की अनित्यता का गम्भीर ज्ञान उत्पन्न हुआ उसने बहुमूल्य वस्त्र और गहने पहनने छोड़ दिए। शास्ता ने उसकी महान् वैराग्य-वृत्ति को देख कर भिक्खुणी से कहा था-

"हे स्थविरिके ! तू सुख की नींद सो। अपने ही हाथों से बनाये वस्त्र को ओढ़कर, तू (इसी जीवन में) परम शान्ति को प्राप्त कर, क्योंकि कढ़ाई में पड़े हुए जले शाक की तरह, तेरा राग (जल कर) शान्त हो गया।[8]

जगत् में जीवन एवं वस्तुओं को अनित्य बताकर बुद्ध यह कहना चाहते थे कि हमें इनके प्रति राग-मोह आदि नहीं रखना चाहिए और जब राग-मोह आदि ही नहीं होगा तो इनके नष्ट होने पर किसी तरह का दु:ख भी नहीं होगा। अत: दु:ख के निरोध के लिए वस्तुओं के वास्तविक गुण अर्थात् अनित्यता को जानना आवश्यक है। थेरीगाथा ग्रन्थ केवल सैद्धान्तिक या आदर्शवादी ग्रंथ न होकर व्यावहारिकता के मार्ग पर चलने वाला ग्रन्थ है। जिस प्रकार तथागत बुद्ध ने स्वानुभवों द्वारा जीवन के दार्शनिक मूल्यों को समझकर समाज को उन व्यवहारिक मूल्यों पर चलने की प्रेरणा द्, उसी प्रकार थेरीगाथा की थेरियाँ ने भी तथागत की इस दार्शनिक परम्परा को आगे बढ़ाने का काम किया। थेरीगाथा की थेरियों की गाथाएँ उनके स्वयं के जीवन अनुभवों एवं तथागत के दार्शनिक सिद्धान्तों का एक मिला-जुला रूप है।

थेरीगाथा की थेरियाँ अपनी गाथाओं में अपने पूर्वजन्मों के अनुभवों को तो सांझा करती हैं लेकिन बुद्धोपदेश सुनकर, वे थेरियाँ पुनर्जन्म की इच्छा नहीं रखती हैं। चार आर्य सत्यों को अविद्यादि कारणों से सम्यक् रूप से न समझने के कारण वे मोह, तृष्णा, कामादि विषयों में आसक्त रहती हैं। बुद्ध एवं बुद्ध के शिष्य/शिष्याओं के माध्यम से वे आष्टांगिक मार्ग को सम्यक् रूप से जानती हैं एवं बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धान्तों के अनुसार ही शरीर और संसार की क्षणभंगुरता को समझते हुए वे पुनर्जन्म की इच्छा न करते

---

[6] थेरीगाथा, डॉ. विमलकीर्ति, गाथा संख्या 47, पांचवां वर्ग, पृ. 128

[7] थेरीगाथा, डॉ. विमलकीर्ति, गाथा संख्या 1, पहला वर्ग, पृ. 31

[8] थेरीगाथा, डॉ. विमलकीर्ति, गाथा संख्या 1, श्लोक संख्या 1

हुए निर्वाण अर्थात् परम शान्ति को पाना लक्ष्य समझती हैं। थेरीगाथा की थेरियाँ अपने संवादों के माध्यम से यह संदेश देती हैं कि आज के भौतिक युग में जहाँ मनुष्य रुपया, पैसा, नाम, पद, प्रतिष्ठा के पीछे-पीछे भागकर उस चौकाचौंध में अन्धा हो चुका है। मोह-माया में फँसा हुआ है। 'थेरीगाथा' की थेरियों से प्रेरणा लेते हुए उसे स्वयं को प्रकृति को सौंप देना चाहिए।

थेरीगाथा में थेरियों ने, जो अर्हत भी हुई थी, अपने जीवन के सत्य को, अपने जीवनानुभव को, अपने भिक्खुणी होने के पूर्वजन्म को और भिक्खुणी होने के बाद के जीवन को, जो उन्हों ने अनुभव किया, जाना, पहचाना उसको बहुत ही सुंदर ढंग से, गाथाओं के माध्यम से और भावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया है। इसमें थेरियों की विशेषता यह दिखाई देती है कि वे अपने पूर्वजीवन को बताने में कहीं संकोच नहीं करती हैं। बुद्ध का दर्शन यह कहता है कि जीवन में दु:ख है, इसे स्वीकार करो और उसे दूर करने का रास्ता है, उसे समझो। थेरियों ने अपने जीवन के दु:ख को समझा और उसे व्यक्त भी किया और उस दु:ख से मुक्त होकर जिस परम शान्ति का अनुभव किया, उसको भी व्यक्त किया। थेरियों के जीवन में श्रम की, पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा है। लेकिन कहीं भी भोगवाद नहीं है, उसी प्रकार उनके जीवन में इन्द्रियासक्ति भी नहीं है। उनके जीवन में सुख वस्तुओं के उपभोग में नहीं, बल्कि वस्तुओं के प्रति, इच्छाओं के प्रति अनासक्त भाव में है। उनके जीवन में सुन्दरता बाह्य सौन्दर्य में नहीं, बल्कि आन्तरिक सौन्दर्य में, मन की शुद्धता और पवित्रता में है।

वर्तमान समय में जिस प्रकार समूचे विश्व में भौतिकतावाद पैर पसार रहा है, जिसके कारण समाज में तमाम विसंगतियाँ फैल रही है, ऐसे समय में बौद्ध दार्शनिक चिन्तन परम्परा के व्यवहारिक मूल्यों पर चलने वाली थेरीगाथा की थेरीयाँ एक उम्मीद जगाती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

थेरीगाथा, डॉ. भरत सिंह उपाध्याय, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010

थेरीगाथा, डॉ. विमलकीर्ति, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2008

बौद्ध-दर्शन-मीमांसा, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण, 2014